International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 05-05-2020; Accepted: 16-05-2020; Published: 07-06-2020
www.educationjournal.org
Volume 5; Issue 3; 2020; Page No. 00-00

ब्रज प्रदेश की सीमा का सांस्कृतिक–विवेचन

Manorama Devi
Post-Doctoral fellowship, PGDAV, Delhi University, Delhi, India

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति विश्व की संस्कृतियों से भिन्न अन्यतम संस्कृति है, और भारतीय संस्कृतियों में ब्रज लोक–संस्कृति की अलग पहचान है इसीलिए ब्रज लोक संस्कृति संसार की श्रेष्ठत्म संस्कृति कहलाती है। वैदिक युग से वर्तमान युग तक ब्रज लोक संस्कृति ने मानव को शाश्वत जीवन मूल्य और अति उत्तम संस्कार दिये हैं। विश्व में उत्तम संस्कृतियों में ब्रज प्रदेश की संस्कृति का नाम आता है। ब्रज संस्कृति से अभिप्रेत भारत वर्ष का ह्रदय है। भारत में ब्रज जनपद की संस्कृति महत्वपूर्ण तथा महिमामयी है। इसी कारण ब्रज का स्थान सर्वश्रेष्ठ माना गया है। वर्तमान समय में मथुरा जिले के समीपवर्ती प्रदेश को ब्रज के नाम से जाना जाता है। शूरसेन जनपद ब्रहमर्णि देश के अन्तर्गत था। ब्रह्मर्णि देश के निवासियों के आचार–विचार व संस्कृति को आदर्श माना जाता था।

ब्रज भूमि की महिमा गौ, गोप, गोपाल और गोपियों में ही समाहित है। कृष्ण की ब्रजभूमि वस्तुतः 'वन–भूमि' थी। कृष्ण ने वन–उपवनों में घूमकर गाँए चराई थीं और ब्रज की रक्षा की थी। इसी कारण ब्रज के वन–उपवन गौ, गोप, गोपाल और गोपिकाओं का सांस्कृतिक महत्व है। ब्रजवासियों का लोक–जीवन गौ–वंश पर आधारित था। वे गाय के दुध से दही, मठ्ठा (छाछ), घृत व मक्खन जैसे पौष्टिक पदार्थ से तरह–तरह के व्यंजन बनाते थे। गौ–वंश से प्राप्त गोवर व मूत्र से बनाई खाद खेतों में उपज बढ़ाने के काम आती थीं। ब्रज वासियों (गोपजनों) के जीवन का आधार गाय ही थीं। गौ–वंश परिवार के साथ रहने कारण पारिवारिक सदस्य की तरह से मान्य थीं। गौ पूजनीय और वंदनीय भी थीं। हम ब्रजवासी गौ को माता कहते हैं। ब्रज में गाय को अनुपम गौरव प्रदान किया गया है। ब्रजवासी अपने दरवाजे पर गाय बाँधना, सुख, सौभाग्य और समृद्धि का प्रतीक मानते हैं। गौ सेवा करना प्रत्येक ब्रजवासी अपना कर्तव्य मानता है। प्रत्येक ब्रजवासी अपनी रसोई की बनी पहली रोटी गाय को ही देता है। इसे परम कर्तव्य मानते हैं।

वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार– ''ब्रज, गौएँ, गोपाल, गोप और गोपी ये कृष्ण लीला के पाँच तत्व है। उपनिषद तथा अन्य ग्रन्थों में इसके अर्थ दिये गए हैं। उपनिषदों के अनुसार यह शरीर ब्रज भूमि है इंद्रिया गौ हैं, निर्लेप आत्मा गोपाल है, जीव गोप और वृतियाँ गोपियाँ हैं।'गोप्पो गाः मृचस्तय'। अर्थात वेद की मृचाएँ ही गोपियाँ और गौएँ हैं। गोकुल नन्दवन है तथा लोभ–क्रोधादिक दैत्य हैं, जिनके साथ गोपाल का गौओ की रक्षा हेतु अजस्त्र संग्राम हुआ था।''[1]

वैदिक साहित्य में अनेक स्थानों पर इन्द्रियों को गौ की संज्ञा दी गई है। गौएँ अमृतमयी दुग्ध को गोपाल को अर्पण करती थी। यह देह गोपाल की लीला स्थली है। पौराणिक जनश्रुति के अनुसार यह समस्त भू–मण्डल गाय के सींगों पर टिका हुआ माना जाता है। भागवत पुराण में सम्पूर्ण पृथ्वी को गौ की संज्ञा दी गई है, कलियुग के अनाचारों से दुःखी होकर पृथ्वी गौ का रूप धारण करके ब्रहमा, विष्णु व महेश से अनुनय–विनय करती है कि अत्याचारों के बोझ से अत्यन्त दुर्बल हो गई हूँ, उसे पुनः जीवन प्रदान किया जाए। यदि देखा जाए तो आध्यात्मिक रूप से संपूर्ण ब्रज को एक गौ शाला कहा गया है।

गौ' का अर्थ यदि गायों से लिया जाए तो गायों का कुल (वंश) समूह यहाँ निवास करता है, वही गोकुल है। 'गोकुल' शब्द यौगिक है। दो शब्दों के मेल से बना है। गौ और कुल (गौ का अर्थ गौऐं, गऊए) (कुल का अर्थ वंश, समूह) श्री नन्दराय जी का पैतृक घर भी गोकुल ही था। गोकुल शब्द का अर्थ गायों का समूह। जी नन्दराय जी गोकुल के पति थे। ऐसा माना जाता है कि नन्दराय जी के पास नौ लाख गायें थी। गोकुल गाँव का वाचक और पति शब्द स्वामी, सभी गायों के स्वामी। अर्थात नन्दराय जी गोकुल के अधिष्ठाता थे। वही कृष्ण के आने के वाद नन्द बाबा बन गये। नन्दराय जी के कुल को ब्रज का स्वामित्व प्राप्त था। श्रीमद्भागवत का यह प्रसंग अत्यंत महत्वपूर्ण और आध्यात्मिक माना जाता हैं कि जब श्री कृष्ण का जन्म हुआ, तो कंस के कारागार के फाटक खुल गए। पहरेदार निद्रागस्त हो गये। वासुदेव की हथकली और बेड़ियाँ स्वतः ही खुल गयीं। कृष्ण (ब्रहम) जब वहाँ से चले गये। फाटक स्वतः ही बन्द हो गया। पहरेदार जाग गये। यही आध्यत्मिकता है।

श्री नंदराय ने अपने पैतृक गाँव–गोकुल को, कंस के अनेक अत्याचारी, आतातायी अनुचरों के उत्पात मचाने के कारण तथा गोप–गोपी–गौ–धन....आदि की हानि होने के कारण अनेक प्रकार के अत्याचारों से तंग आकर छोड़ दिया। नंदराय जी सुरक्षा की दृष्टि से समस्त लोगों के साथ (परिवार जन और अन्य जनों) को लेकर वृन्दावन के समीप चले गये थे। वृन्दावन सुन्दर गोचर भूमि थी। जो गोवर्धन पर्वत तक फैली थी। श्री कृष्ण यहीं पर गाऐं चरातें, ग्वाल–बाल सखाओं और गोपिकाओं के साथ मन–मोहक मुरली बजाते, लीलाऐं करते। ग्वालिने गोकुल का दुध, दही–मक्खन मथुरा ले जाती थीं, कृष्ण ने इस पर रोक लगाई। उन्होंने गोकुल की निधि को मथुरा नहीं पहुँचने दिया। कृष्ण ने बालमण्डली बना ली थी। गौ चराते मक्खन खाते और गौनिधि को मथुरा जाने से रोक लेते थे। जब मथुरा मक्खन–दुध–दही जाना कम हो गया। कंस ने कृष्ण को मारने के लिए तरह–तरह से प्रयत्न किये। कृष्ण/ब्रह्म ने ब्रज को अनेकानेक संकटों से बचाया, कष्टों से मुक्ति दिलाई। अनेक राक्षसों को मारा। दावानल को शांत किया। गाँव के सभी मानस की ही नहीं, बल्कि पशु–पक्षियों की भी रक्षा की। यमुना नदी को कालिया–नाग से मुक्त किया। गाँव के कल्याण हेतु अनेक कार्य किये। उन्होंने पूरे ब्रज को ही गाँव माना और रक्षा की।

पोद्दार'' ग्रन्थ में कहा गया है कि ''भूः भुवः, स्वः, महः जनः के प्रधान मण्डल को संज्ञा दी जाती है। 'परमेष्ठिमंडल को वेद में गोसव और पुराण में 'गौ लोक' कहा गया है, इसका कारण यह है कि गौ जिन्हें किरण कह सकते हैं, उनकी उत्पत्ति परमेष्ठिमंडल में ही होती है, आगे के मण्डलों में उन गौओं का

विकास है। अतएव सूर्य और पृथ्वी के प्राणों में 'गौ' नाम आया है। इन गौओं का विवरण ब्राह्मण ग्रन्थों में बहुत हैं, ये प्राण हैं– विशेष प्राण। हमारे 'गौ' नाम प्रसिद्ध पशु में इस प्राण की प्राधनता रहती है। अतएव ये गौएँ भी हमारी आराध्या हैं। अस्तु, गौ का उत्पादक और पालक होने से गोपाल परमेष्ठी हैं। प्रथमतः 'गौ' उसे प्राप्त हुई–इसलिए 'गोविन्द' है।''[2]

भोगोलिक मानचित्र में ब्रज नाम का कोई स्थल या प्रदेश नहीं है। ब्रज का अपना विशिष्ट अस्तित्व है। ब्रज की अपनी विशेष संस्कृति है। 'ब्रज' या 'व्रज' शब्द का अर्थ है गतिशीलता। यह शब्द संस्कृत धातु ब्रज से बना है। 'ब्रज' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग हमें ऋग्वेद में मिलता है। ''यजुर्वेद में (ब्रज गच्छगोष्ठान) गायों के चरने के स्थान को ब्रज और गौशाला को गोष्ठ कहा जाता है।''[3]

डॉ० गिरीश कुमार चतुर्वेदी के अनुसार– ''हरिवंश एवं भागवत पुराण में इस शब्द का प्रयोग कृष्ण के पिता नन्द के मथुरा के निकट 'ब्रज' अर्थात गोष्ठ विशेष की भूमि के लिए होने लगा था। श्रीमद्भागवत में कृष्ण को लेकर ब्रज का उल्लेख मिलता है। वैसे मथुरा के समीप के भूभाग को ही ब्रज कहा गया है। चौरासी कोस की भूमि ही ब्रज कहलाती है। आगे चलकर इसकी सीमा को ग्वालियर तक बढ़ा दिया गया था। राजा सूरजमल ने जिस प्रदेश की सीमा दिल्ली और ग्वालियर के बीच मानी है। वही ब्रज चौरासी कोस है।''[4]

श्रीकृष्ण अब से लगभग 5 हजार वर्ष पहले के माने जाते हैं। इतने लम्बे समय के अंतराल में मथुरा मण्डल ने अनेक उतार–चढ़ाव देखे। श्रीकृष्ण की जीवनी में जिन–जिन स्थानों या प्रसंगों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वर्णन आया। उन सबका संबंध किसी ना किसी स्थान विशेष से जोड़ दिया गया है। डॉ० सत्येन्द्र के मतानुसार ''पौराणिक काल में इसी क्षेत्र का नाम 'ब्रज–मण्डल' पड़ा। संभवतः मत्स्यपुराण में ही ब्रज का कुछ विस्तृत ब्यौरा भूगोल की दृष्टि से मिलता है। पौराणिक काल में इसका प्रचलन तो हुआ पर प्रबलता इसमें 15–16वीं शताब्दी के वैष्णव–आंदोलनों के द्वारा आई। इस काल तक जनपदों और प्रदेशों के प्राचीन नाम हट चुके थे अथवा शिथिल हो चुके थे। अतः धर्म के मेरूदण्ड पर निर्भर 'ब्रज' नाम शेष समस्त भौगोलिक नामों को परास्त करके जम गया।''[5]

डॉ० हरवंश लाल शर्मा के मतानुसार–''ब्रज–प्रदेश का नामकरण मध्यकाल के भक्ति आंदोलन से है। संभवत प्रदेश के अर्थ में ब्रज का प्रयोग 3वीं शताब्दी के पश्चात ही हुआ है।''[6]

डॉ० प्रभु दयाल मित्तल के अनुसार– ''उस काल में मथुरा राज्य की सीमाऐं उत्तर में दिल्ली तक, पश्चिम में वर्तमान अजमेर तक और दक्षिण में ग्वालियर तक थी।''[7]

यह निश्चित है कि कृष्ण उपासक सम्प्रदायों और ब्रज भाषा कवियों के कारण ब्रज संस्कृति और ब्रज भाषा का विकास हुआ तब ब्रज का आकार भी सुविस्तृत हो गया। ''सूरदास जी ने गाया है चौरासी ब्रज कोस निरंतर खेलत हैं, मनमोहन। इस प्रकार ब्रज धाम का विस्तार चौरासी कोस निश्चित होता है।''[8]

उस समय मथुरा नगर ही नहीं बल्कि उससे दूर–दूर के भू–भाग भी ब्रज संस्कृति और ब्रज भाषा से प्रभावित थे। यह सभी भू–भाग भी ब्रज क्षेत्र के अंतर्गत मान लिये गये। मथुरा नगर सहित मथुरा जिले का अधिकांश भाग पलवल जिले की होडल तहसील (हरियाणा) तथा राजस्थान के डीग और कामवन का कुछ भाग, जहाँ–जहाँ से ब्रज यात्रा गुजरती है। उसे ब्रज कहा जाता है। इसलिए ब्रज–संस्कृति और ब्रज का क्षेत्र विस्तृत है।

वर्तमान समय में उत्तर–प्रदेश के मथुरा नगर सहित वह भू–भाग जो श्रीकृष्ण के जन्म और विविध लीलाओं से संबंधित है, वह भू–भाग ब्रज कहलाता है। ब्रज वर्तमान मथुरा मण्डल और प्राचीन शूरसेन प्रदेश का अपर नाम और उसका छोटा रूप है। इसमें मथुरा, वृन्दावन, गोवर्धन, गोकुल, महावन, नन्दगाँव, वरसाना, डीग, कामवन और होडल आदि भगवान श्रीकृष्ण के सभी लीला स्थल सम्मिलित है। उक्त ब्रज की सीमा को चौरासी कोस माना है। इससे अलग मथुरा 'मधुपुरी' या 'मधुवन' से पृथक ब्रज क्षेत्र में आने वाले प्रमुख नगर ये हैं। मथुरा, जलेसर, भरतपुर, आगरा, हाथरस, धौलपुर, अलीगढ़, इटावा, एटा, फर्रूखावाद, कासगंज, फिरोजावाद और पलवल है। यदि भौगोलिक सीमा के अनुसार जिसे ब्रज क्षेत्र मानते हैं। उसकी दिशाऐं उत्तर दिशा में पलवल (हरियाणा)। दक्षिण में ग्वालियर (मध्य–प्रदेश)। पश्चिम में भरतपुर (राजस्थान) और पूर्व में एटा (उत्तर प्रदेश) को छूती हैं। ब्रज लोक संस्कृति की सीमा का आंकलन ब्रज भाषा, रीति–रिवाज, परम्परा, रूढ़ि, आचार–विचार, रहन–सहन, ब्रज लोक कला, ब्रज लोक–गीत, ब्रज लोक नृत्य, रास–लीला, ब्रज लोक–विश्वास और लोक–प्रतीक.....आदि के आधार पर बड़ी सहजता से किया जा सकता है। मथुरा–वृन्दावन ब्रज का केन्द्र हैं। किन्तु वर्तमान समय में ब्रज भाषा के शब्दों का प्रयोग पंजाब से महाराष्ट्र तक और राजस्थान से लेकर बिहार तक बोल–चाल में रोजाना होते हैं। आज संपूर्ण ब्रज कृष्ण की यादें हृदय में संजाये हुए हैं। संपूर्ण ब्रज कृष्ण की भूमि है। इसीलिए ब्रज लोकगीतों में जन्म से लेकर मरण तक सभी अवसरों पर कृष्ण का नाम समाहित है। कृष्ण से तो पूरा विश्व परिचित है।

ब्रज क्षेत्र की सीमाऐ तो हैं और उनका निर्धारण भी किया गया है। लेकिन वहाँ तक ब्रज क्षेत्र मान लेना उचित नहीं है क्योंकि जहाँ–जहाँ ब्रजवासी रहते है। वहाँ–वहाँ उनके हृदय में कृष्ण की यादें समायी हुई है। ब्रज में जितने भी स्थान हैं वे प्रायः सभी श्रीकृष्ण की लीला स्थली है। वहीं उनकी ब्रज संस्कृति है। इसीलिए ब्रज की सीमा का निर्धारण करना असम्भव है। अभी तक इस प्रकार का कोई प्रमाण नहीं मिलता जिसके आधार पर लंबाई–चौड़ाई का ठीक अनुमान लगा सके।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ० हर्ष नन्दिनी भाटिया, ''ब्रज संस्कृति और साहित्य'' पृ० 41
2. (पौद्दार ग्रन्थ से उद्घृत, पृ० 933)
3. शोधगंगा, भौगोलिक ब्रज, प्रथम भाग, पृ० 1
4. डॉ० गिरीश कुमार चतुर्वेदी, ''ब्रज की लोक संस्कृति'', पृ० 11
5. डॉ० सत्येन्द्र, 'ब्रज का नामकरण–लेख से'
6. डॉ० हरवंश लाल शर्मा, सूर और उनका साहित्य पृ० 394
7. डॉ० प्रभु दयाल मित्तल– ''ब्रज की कलाओं का इतिहास'' पृ० 65
8. ब्रज दर्शन–पृ० 01